उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड फेडरेशन - थिऑसोफिकल सोसाइटी
पत्रक

Vol 14 जनवरी - मार्च 2022 No. 2

वर्ष 2021-22 का मुख्य विषय - 'बिना प्रतिरोध करते हुए प्रतिरोध करो'

## 'शिष्टाचार'

हमें एक दूसरे के प्रति शिष्टाचार पूर्ण ही होना चाहिए।इस आधार पर कि हम सभी के अंदर एक दिव्यता को जानते हैं, प्रत्येक मानव प्राणी के लिए आदर और गरिमा होना चाहिए। एक दूसरे के साथ हमारी पारस्परिक क्रिया इस धारणा पर आधारित होना चाहिए जिसको ग्लेन केज़वर 'जीवन -सहायक' कहते हैं। दूसरे शब्दों में हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि हम जीवंत चैतन्य प्राणी है जो संसार के साथ पांच इंद्रियों से संपर्क करते हैं। हम में से प्रत्येक में इस जीवन को पहचानना चाहिए और इस को गरिमा प्रदान करना चाहिए। पतंजलि के योगसूत्र में अहिंसा पर जोर दिया गया है। गांधीजी के स्वतंत्रता आंदोलन में भी अहिंसा एक मुख्य आधार बिंदु था। हम लोग विचारों द्वारा, शब्दों द्वारा और कार्यों द्वारा हिंसा करते हैं।

भारतीय परंपरा में जब लोग एक दूसरे से मिलते हैं या एक दूसरे से विदा होते हैं, तब वे अपने दोनों हाथों को जोड़कर 'नमस्ते' शब्द के साथ एक दूसरे का अभिवादन करते हैं। इसका अर्थ है, 'मैं आपका आदर करता हूं' या 'मेरे अंदर का दिव्य तत्व आपके अंदर के दिव्य तत्व का आदर करता है।' यदि हम इस शब्द के अक्षरों को अलग-अलग देखे तो 'न' का अर्थ है 'नहीं', 'म' का अर्थ है 'मैं' और 'ते' का अर्थ है 'तुम' या 'आप'। नमस्ते शब्द का अर्थ होगा, ' न मैं या तुम'। जैसे हम जुड़े हुए हाथ को ऊपर की ओर उठाते हैं, तो यह प्रतीक रूप से उच्चतम, अनंत सत्त्व जो शुद्ध चेतना है और हम में से प्रत्येक के अंदर है, उसको दर्शाता है, और जो सम्मान और आदर का पात्र है। हम अशिष्ट व्यवहार के कई उदाहरण सोच सकते हैं जिसमें सड़क पर चालकों द्वारा रोष प्रकट करना, प्रजातिवाद, अपने अधीनस्थ या सहकर्मी के साथ हिंसक व्यवहार या निम्न स्तर की भाषा का प्रयोग करना, इत्यादि।

जब हम दूसरे व्यक्ति के साथ शिष्ट और आदर सहित व्यवहार करते हैं तब हम यह संकेत देते हैं कि हम उनकी उपस्थिति को एक मानवीय प्राणी के रूप में महत्व देते हैं। हम उनको अपने अपने स्वाभाविक महानता को जानने के लिए योग्य बनाते हैं। व्यक्तिगत स्वतंत्रता के साथ व्यक्तिगत कर्तव्य भी होता है। हम वह पाते हैं, जो हम देते हैं। शिष्टाचार लोगों के साथ ऐसा व्यवहार है जो दूसरों के प्रति आदर की भावना को दर्शाता है और जो स्वयं अपने स्वार्थ को कम करता है। गीता के 10वे अध्याय में हम पढ़ते हैं कि हममें से हर एक के अंदर कृष्ण निवास करते हैं जो हमारा स्वयं आंतरिक स्व है और इसी आंतरिक

चेतना के माध्यम से हम एक दूसरे के साथ जुड़े होते हैं। हम सभी एक दूसरे से जीवन के एकत्व के आधार पर एकीकृत होते हैं। हमें उस पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए जो सबको साथ जोड़ता है, ना कि विभाजित करता है। और ऐसा दृष्टिकोण हमें एक दूसरे के साथ आदर पूर्ण व्यवहार करने में सहायक होता है। सभी मान वीय प्राणियों और सभी जीवों के प्रति आदर और गरिमा का भाव इस श्लोक में है - " सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित् दुःख भाग्भवेत्।"

आध्यात्मिक जीवन में हमें दो मानक सीखना है - अर्थात अपने प्रति अन्याय की अनदेखी करके उसे जाने देना चाहिए, किन्तु यदि किसी दूसरे निर्दोष व्यक्ति के प्रति अन्याय पूर्ण व्यवहार या लांछन लगते हुए देखें तो उसका बचाव अवश्य करना चाहिए। जैसे तालाब में पत्थर फेंके जाने पर लहरें उठती हैं और चारों तरफ फैल कर सीमा से फिर वापस केंद्र पर आती है जहां से पत्थर फेंका गया था, इसी प्रकार किसी क्रिया की प्रतिक्रिया उस कर्ता के पास लौटती है। लेकिन जब हम सभी प्राणियों की तरह और उनके लिए कार्य करते हैं तब हम कर्म के प्रतिक्रिया के वापस आने का केंद्र नहीं बनाते। यह उसी तरह होता है जैसे एक सीमाविहीन तालाब में पत्थर फेंका जाये ताकि लहरें वापस न हो सकें। थिऑसोफी किसी विशेष व्यवहार के ढंग को नहीं बताती है किंतु यह सहजता से एक नियम बताती है जिससे द्वारा हमारे सभी कार्य नियंत्रित होने चाहिए और उनके परिणाम भी घोषित करती है। इस नियम में यह बताया गया है कि प्रथम सभी कार्यों में अभी और सर्वदा के लिए समरसता हो, और दूसरा विचार और कार्य में सामान्यतया घृणा और प्रतिरोध कम हो।

(दि थिऑसोफिकल मूवमेंट - फरवरी 2022 के एक लेख पर आधारित)

## शांतिप्राप्त सदय

श्रीमती अर्चना अग्रवाल (लखनऊ) दि 27 जनवरी को शांतिप्राप्त हुईं।

## विशेष क्रिया कलाप

- आठ लॉजों - लखनऊ के धर्म और प्रज्ञा, कानपुर का चोहान, गोरखपुर का सर्वहितकारी, गाज़ियाबाद का प्रयास, नोएडा, इलाहबाद का आनंद, वाराणसी का काशी तत्त्व सभा ने ऑनलाइन बैठकें की। इन लॉजों में उस लॉज के बाहर के तथा फेडरेशन के बाहर के कुछ वक्ताओं ने भी वार्ताएं दीं। आगरा के निर्वाण लॉज ने कुछ भौतिक और कुछ ऑनलाइन बैठकें कीं।
- **फेडरेशन स्तर पर** - 'थिऑसॉफी की मूल बातें' से सम्बंधित वार्ता की श्रृंखला में बंधु शिवकुमार पाण्डेय ने 9 जनवरी को 'पुनर्जन्म' विषय पर, बंधु श्याम सिंह गौतम ने दि. 13 और 27 फरवरी तथा 13 मार्च को तीन सत्रों में 'सात तत्त्व, शरीर और स्तर' विषय पर तथा बहन विभा सक्सेना ने दि. 27 मार्च को 'तीन महान सत्य और तीन मूल प्रस्तावनाएं' विषय पर वार्ताएं दिया।

## लॉजों द्वारा विशेष कार्यक्रम

- प्रज्ञा लॉज लखनऊ ने दि 13 फरवरी को अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष बंधु टिम बॉएड और श्रीमती लिली बॉएड के साथ थिआसोफी विषय पर एक प्रश्नोत्तर सत्र ऑनलाइन आयोजित किया जिसमे कई देशों के सदस्यों ने भाग लिया। उसी लॉज ने दि 20 मार्च को भारतीय शाखा के अध्यक्ष बधु प्रदीप गोहिल के साथ एक ऑनलाइन साक्षात्कार आयोजित किया।
- आगरा के निर्वाण लॉज ने दि 3 मार्च को लॉज का स्थापना दिवस मनाया जब बंधु सी ए शिंदे ने 'लॉज स्थापना दिवस का महत्त्व' विषय पर एक वार्ता दिया।
- गाजियाबाद के प्रयास लॉज में बच्चों और युवाओं के लिए प्रत्येक रविवार प्रातः अध्ययन कक्षा चलाई गई जिसमें 'निरीक्षण और स्व-पुनरावलोकन', 'नए वर्ष में एक नवीन प्रारम्भ की योजना', 'अच्छी आदतें बनाना', 'शुद्ध प्रेम', 'स्वस्थ आदतें', 'शिक्षा का वास्तविक अर्थ' तथा 'स्व-अनुशासन के लिए चैतन्य प्रयास' विषय लिए गए।

## छात्रों/शिक्षकों/युवाओं के लिए कार्यक्रम

वसंत कन्या महाविद्यालय, वाराणसी के स्नातक और परास्नातक छात्रों के लिए थिऑसोफी के द्वारा आत्म-अनुभव के विषय पर एक पाठ्यक्रम नवंबर 2021 शुरू किया गया था। इसी क्रम में मार्च 2022 में बंधु शिखर अग्निहोत्री ने 9 सत्रों में अलग-अलग विषयों पर वार्ताएं दिया।

## सार्वजनिक वार्ता

बंधु शिवकुमार पाण्डेय द्वारा गंगाघाट उन्नाव में स्थित गायत्री मिशन केंद्र में महाशिवरात्रि के अवसर पर दि 1 मार्च को 'शिव के सांकेतिक रूप' विषय पर एक सार्वजनिक वार्ता दी गयी।

## अन्य फेडरेशनों में योगदान/वार्ताएं

**दिल्ली, बॉम्बे और गुजरात फेडरेशन** के कुछ लॉजों में बंधु उमाशंकर पाण्डेय, शिवकुमार पाण्डेय, भौमिक भट्ट, बहन वसुमती अग्निहोत्री, विभा सक्सेना, शुभ्रलीना मोहंती, कृतिका गोयल द्वारा अलग-अलग विषयों पर वार्ताएं दी गईं।

## भारतीय शाखा के कार्यक्रम में भागीदारी

- बंधु श्याम सिंह गौतम ने जनवरी, फरवरी और मार्च 2022 के 'दि इंडियन थिऑसोफिस्ट' अंग्रेजी पत्रिका का हिंदी अनुवाद किया।

- बंधु शिखर अग्निहोत्री ने दि 21 और 28 जनवरी को दो सत्रों में 'महात्मा के पत्र - 11' पर तथा 7, 20 और 27 मार्च को तीन सत्रों में 'मृत्यु और उसके पश्चात' पुस्तक पर अध्ययन कराया।
- बहन विभा सक्सेना ने दि 23 और 30 जनवरी को 'मनुष्य के सात तत्त्व' पुस्तक पर तथा दि 4, 11 और 18 मार्च को तीन सत्रों में 'महात्मा के पत्र - 15' पर अध्ययन कराया।
- बहन श्रेयशी ओझा ने दि 17 फरवरी को अड्यार दिवस के अवसर पर 'सी डब्लू लेडबीटर और जी ब्रूनो के कार्य' पर वार्ता दिया।
- बहन कृतिका गोयल ने दि 13 फरवरी को 'शूरवीरता के कार्य' पर एक प्रस्तुतीकरण किया।
- बहन वसुमती अग्निहोत्री ने 19 और 26 फरवरी तथा 5 मार्च को तीन सत्रों में 'एस्ट्रल प्लेन' पर वार्ता दिया।

## ऑनलाइन अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम में भागीदारी

बंधु शिखर अग्निहोत्री ने बेल्जियम शाखा द्वारा आयोजित दि 22 जनवरी को आयोजित कार्यक्रम में 'अंदर के घर वापसी संकेत पर चलना' विषय पर वार्ता दिया।

बंधु उमा शंकर पाण्डेय ने मास्को के एडमंड लॉज द्वारा दि 26 फरवरी को आयोजित 'दि सीक्रेट डॉक्ट्रिन - खण्ड 1 के छंद 2 , श्लोक 2' पर गोष्ठी में एक पैनेलिस्ट के रूप में भाग लिया।

## अन्य समूहों में योगदान

युवा भारतीय थिऑसोफिस्ट समूह में बहन शुभ्रलीना मोहंती ने 9, 16, 23 और 30 जनवरी को चार सत्रों में 'सनातन ज्ञान' पुस्तक के अध्याय 7 और 8 (पुनर्जन्म) तथा दि 6 और 13 फरवरी को दो सत्रों में उसी पुस्तक के अध्याय 9 (कर्म) का अध्ययन कराया। बंधु शिखर अग्निहोत्री ने दि 13 और 20 मार्च को उसी पुस्तक के 'मनुष्य की चढान' अध्याय पर अध्ययन कराया। बहन कृतिका गोयल ने इस पुस्तक के अध्ययन सत्रों का संचालन किया।

———

फेडरेशन द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की जानकारी तथा बुलेटिन, पुस्तक-पत्रिकाओं की डिजिटल कॉपी प्राप्त करने हेतु https://theosophy-upuk.in पर निःशुल्क सब्सक्राइब करें।

---

संकलन/सम्पादन
उमाशंकर पाण्डेय, अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड फेडरेशन
सहयोग: राजेश गुप्ता, धर्म लॉज, लखनऊ